अंधेरे से जूझती एक शख्सियत

श्रीमती प्रीति मोंगा। दो शरारती बच्चों की मां और एक कामकाजी महिला। स्वभाव से हंसमुख और ऐसी सलीकेदार गृहिणी, जिनसे पहली बार मिलनेवाला व्यक्ति यह जान ही नहीं पाता है कि वे देख नहीं सकतीं। प्रीति प्रकाशन से जुड़े एक गैर सरकारी संस्थान में मार्केटिंग मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं। वे बताती हैं,"मैंने गंधर्व विश्वविद्यालय से संगीत में विशारद की उपाधि हासिल की है। सितार मेरा प्रिय वाद्ययंत्र है। इसलिए कई लोगों ने मुझे सलाह दी कि मैं किसी स्कूल में टीचर की नौकरी कर लूं, मगर मैं कुछ ऐसा करना चाहती थी, जिससे मेरी अलग पहचान बने। यही वजह है कि मैंने मार्केटिंग का क्षेत्र चुना, जहां लोगों को ज्यादा करीब से देखने-समझने का मौका मिलता है। यह काम मेरे लिए चुनौतीपूर्ण था, लेकिन हर चुनौती मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रही।"

वे बताती हैं,"जब मैं चौथी क्लास में पढ़ती थी, तब मुझे एकाएक ब्लैकबोर्ड पर लिखे वाक्यों को पढ़ने में दिक्कत होने लगी। शुरू में मम्मी-पापा ने समझा कि मैं पढ़ाई से जी चुरा रही हूं। जब ज्यादा परेशानी होने लगी, तो मम्मी मुझे डॉक्टर के पास ले गयीं। डॉक्टर ने बताया कि स्मॉल पॉक्स की वैक्सीन के रिएक्शन की वजह से मेरी ऑप्टिक नर्व नष्ट होती जा रही है। धीरे-धीरे मेरी आंखों की रोशनी बिलकुल खत्म हो जाएगी और इसका कोई इलाज नहीं है।"

उसके बाद से ही प्रीति ने अंधेरे से दो-दो हाथ करने की ठान ली,"अब क्लास में जो भी पढ़ाया जाता, उसे मैं बेहद ध्यान से सुनने की कोशिश करती। जब तक थोड़ी भी रोशनी बची थी, मैं मैग्निफाइंग ग्लास से ज्यादा से ज्यादा किताबें पढ़ती रही। आठवीं कक्षा तक पहुंचते पहुंचते मैं पूरी तरह दृष्टिहीन हो चुकी थी। उस पर टीचर की शिकायत थी,'यह लड़की क्लास को बहुत डिस्टर्ब करती है।' लिहाजा मुझे स्कूल से निकाल दिया गया।" विकलांगों और विशेषत: अक्षम लड़कियों के प्रति सरकार और समाज के रवैए को ले कर प्रीति के मन में काफी खिन्नता और नाराजगी है। वे कहती हैं,"देश की राजधानी में दस ब्लाइंड स्कूल हैं, जिनमें लड़कियों के लिए सिर्फ तीन हैं। उनमें से भी एक में सह शिक्षा है। अगर मैं नेत्रहीन विद्यालय जाती, तो मुझे वहीं हॉस्टल में रहना पड़ता। मेरे माता-पिता को लगा कि यदि मैं हॉस्टल में चली गयी, तो समाज से कट जाऊंगी और मेरे व्यक्तित्व का विकास रुक जाएगा। इसलिए वे मुझे घर पर ही पढ़ाते रहे और मम्मी मुझे घर का कामकाज भी सिखाती रहीं। मम्मी की ट्रेनिंग का ही नतीजा है कि आज मैं खाना बनाने से ले कर झाड़ू पोंछा जैसे रोजमर्रा के सारे काम बड़े मजे में कर लेती हूं। उसके बाद मैंने इंदिरा गांधी ओपन यूनिवर्सिटी से बारहवीं पास की। फिर शादी हुई। पहले बिटिया, उसके बाद बेटा हुआ। जब तक बच्चे छोटे थे, मैं मम्मी के साथ ही रही। इसके बावजूद बच्चों को मैंने खुद ही पाला है। मेरे दोनों बच्चे काफी समझदार हैं। पांच-छह साल की उम्र में ही वे मुझे रास्ता बताते हुए अपने साथ घर के आसपास सैर कराने ले जाते थे। वैसे बच्चे तो शरारती होते ही हैं, उन्हें मालूम है कि मम्मी को दिखाई नहीं देता है, इसलिए वे मुझे ब्लैंक पेपर दिखा कर कह देते हैं—मम्मी, मैंने होमवर्क कर लिया।" कहती हुई प्रीति खिलखिला कर हंस पड़ती हैं।

अपने शौक के बारे में प्रीति का कहना है,"संगीत सुनना तो मेरा शौक है ही, साथ ही मुझे पढ़ने और लिखने का भी काफी शौक है। कैसेट में कोई अच्छी किताब मिल जाए, तो मैं उसे जरूर सुनती हूं। विकलांगों की समस्याओं पर कभी-कभी अखबारों में लेख भी लिखती हूं। मैं हेल्थ-कॉन्शस भी हूं। इसलिए मेरी एरोबिक्स सीखने की बड़ी इच्छा थी। जब मैं एरोबिक्स की मशहूर प्रशिक्षक वीना मर्चेंट के पास गयी, तो उन्होंने कहा,'मैं तुम्हें सिखाऊंगी कैसे?' फिर भी मेरी सीखने की लगन से वे काफी प्रभावित हुईं और सिखाने को तैयार हो गयीं। उसके बाद मैंने एरोबिक्स केवल सीखा ही नहीं, बल्कि सीखने के बाद लड़के-लड़कियों को खुद ट्रेनिंग देना शुरू कर दिया। इस तरह मेरा यह शौक आमदनी का भी जरिया बन गया। आजकल नौकरी की व्यस्तता की वजह से मैंने ट्रेनिंग देना बंद कर दिया है, लेकिन मैं खुद रोज व्यायाम करना नहीं भूलती।"

अपनी सफलता का श्रेय प्रीति अपने माता-पिता को देती हैं, जिन्होंने अपनी नेत्रहीन बेटी को इस तरह पाला-पोसा कि उन्हें कभी यह अहसास ही नहीं हुआ कि वे किसी भी मायने में दूसरे बच्चों से कम हैं।

प्रीति कहती हैं,"आज मैं आम लोगों की तरह रोज यमुनापार से दक्षिण दिल्ली चार्टर्ड बस में आती-जाती हूं। कंप्यूटर पर अपना सारा काम करती हूं। दफ्तर से लौटते वक्त खरीदारी करती हूं और घर की देखभाल भी करती हूं।" अपने पति के बारे में प्रीति बताती हैं,"वे एक निजी कंपनी में काम करते हैं। मैं विकलांग हूं और वे पूरी तरह सामान्य हैं। हमारी लव मैरिज हुई है। वे घर के कामकाज में मेरा पूरा हाथ बंटाते हैं। उन्हें यह कतई पसंद नहीं कि एक नेत्रहीन स्त्री की सफलता का श्रेय उन्हें दिया जाए। जब उनसे कोई यह कहता है कि तुमने एक महान कार्य किया है, तो उन्हें बहुत बुरा लगता है।"

प्रीति कहती हैं,"एक तो विकलांग, ऊपर से लड़की होने का मतलब है दोगुनी परेशानी। आप अपने आसपास देखें, तो पाएंगे कि विकलांग पुरुष मजे में बाहर घूमते हैं, लेकिन मेरी जैसी महिलाओं को घर से बाहर निकलते वक्त काफी सोच करनी होती है। इसी तरह शादी और नौकरी भी एक बड़ी समस्या है ही।"

पड़ोसियों, मित्रों और रिश्तेदारों के व्यवहार के बारे में वह कहती हैं,"जरूरत पड़ने पर लोग हमेशा मदद करने के लि तैयार रहते हैं। सभी को एक-दूसरे की मदद की जरूरत होती है। ऐसी बात न कि मैं उनकी कोई सहायता नहीं कर सकती, लेकिन लोग जब किसी विकल की सहायता करते हैं, तो उनके मन में भाव होता है कि मैंने बड़े पुण्य का का किया है। लोगों को अपना यह नजरिया बदलना चाहिए।"

प्रीति अपने व्यक्तिगत प्रयास से नेत्रही

बच्चों की हर तरह की मदद करने को तैय रहती हैं। चाहे उन्हें स्कूल में एडमीशन दिलाना हो या 'ब्रेल' सिखानी हो, प्रीति व यही कोशिश होती है कि वे अपने जैसे लोगों की ज्यादा से ज्यादा मदद करें।

■ विनीता